SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

''संयुक्त प्रान्त में तिलक के होमरुल लीग आन्दोलन का महत्व''

Sanjesh Kumar Mourya
Research Scholar, Department of History
V.S.S.D. College, Kanpur

सारांश

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अनुसार, ''राष्ट्रवाद एक ऐसा विचार है जो लोगों के भीतर उत्पन्न होने वाली प्रक्रिया के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है, लेकिन इसे प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता।'' रामायण और राष्ट्रवाद की अवधारणाएँ समाज में भलाई और नैतिक उत्थान की प्रेरणा देने की शक्ति रखती हैं। इन दोनों विचारधाराओं का आत्मसात करना इस कारण भी प्रासंगिक है कि ये समाज में एकता और सामाजिक कल्याण की भावना उत्पन्न करती हैं।

इस शोध–पत्र में, शोधकर्ता ने होमरूल लीग आंदोलन के तथ्यों को उजागर करने और उसमें लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के योगदान को विशद रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रखर नेता और भारत माता के गौरवशाली पुत्र के रूप में जाने जाते हैं। ब्रिटिश शासन से पूर्व, भारत अनेक राजाओं के अधीन विविधता, धर्मों, भाषाओं, क्षेत्रों, लिपियों और संस्कृतियों से समृद्ध था, जो राष्ट्र की सुंदरता और गरिमा को बढाते थे। लेकिन ब्रिटिश शासन के आगमन के साथ ही देश की आर्थिक और सांस्कृतिक धरोहर क्षीण हो गई और स्वतंत्रता छिन गई।

इस अध्ययन के माध्यम से शोधकर्ता ने तिलक के नेतृत्व में होमरूल लीग आंदोलन के विकास और उसके महत्व को विस्तार से वर्णित किया है। विविध दृष्टिकोणों और ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि तिलक ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में एक सशक्त नेतृत्व स्थापित किया। उनकी दूरदर्शिता और कार्यों ने न केवल स्वतंत्रता की चाह को प्रबल किया, बल्कि उन्होंने देशवासियों में एकता, राष्ट्रवाद और स्व–शासन की भावना को जागृत करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया।

शब्द कुंजीः लोकमान्य तिलक, कल्याण, स्वराज्य, होमरूल लीग, नेत्रत्व, सामाजिक योगदान

प्रस्तावना

सामान्यतः भोर के समय में उदित होने के लिए हीं रवि गोधूलि में अंधकार के गर्त में चला जाता है। यह एक सामान्य मनुष्य की धारणा है, कोई वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं है। अंधकार में जाये बिना रोशनी प्राप्त नहीं हो सकती। गर्म हवा के झोंकों में जाये बिना, कष्ट उठाये बिना, पैरों में छाले पड़े बिना, स्वतंत्रता नहीं मिल सकती।[1]'' उपरोक्त कथन इतिहास के महानायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का है, जिन्हें आधुनिक भारतीय राजनीति में एक महान उग्र राष्ट्रीयतावादी व्यक्तित्व, महान देशभक्त वेदवेत्ता, गणितज्ञ, विधिवेत्ता एवं राष्ट्र निर्माताओं की श्रेणी में संभवतः सबसे दृढ़ निश्चयी महापुरूषों की श्रेणी में शीर्ष स्थान प्रदान किया जाता है, उन्होंने अपने निःस्वार्थ राष्ट्र सेवा एवं जन सेवा

[1] लोकमान्य तिलक हिज राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज पृ0.190 (नागर में भाषण 1 जून 1916)

से अपने जीवन काल में ही प्रायः 'देव तुल्य' स्थान प्राप्त कर लिया। किसी भी राष्ट्र को केवल संचित धन एवं प्राकृतिक सम्पदा के भण्डारण के आधार पर सम्पन्न, सुदृढ एवं महान नहीं कहा जा सकता, परन्तु यदि उस राष्ट्र को कुछ विद्वान, साहसी, स्वार्थहीन एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित महापुरूषों की सेवा प्राप्त हो जाए तो राष्ट्र का उत्थान अवश्य ही द्रुतगामी एवं दर्शनीय होगा, क्योंकि बौद्धिक सम्पदा ही अन्य सम्पदाओं प्राकृतिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक आदि के हितपूर्ण दोहन की वास्तविक निर्देशक होती है।

अस्तु लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की राजनीतिक चढ़ाई बड़ी भयानक थी। 23 जुलाई 1856 इस पावन भारत भूमि पर जन्म लेने वाले बाल गंगाधर तिलक की मौजूदगी चरितार्थ करती है, कि संभवत नियति : साम्राज्यवादियों को चेताना चाहती थी, कि तुम्हारे अत्याचार के दिन लद चुके हैं, तैयार हो जाओ अपने रक्षा कवच को नष्ट होते देखने के लिए क्यों कि इस पावन भारत भूमि पर लोहे की जंजीरों को तोड़ने वाले महामानव का अवतरण हो चुका है । जो प्रतिदिन तुम्हें कमोवेश विद्रोह के समान ही संघर्ष करने को विवश कर शक्तिहीन बना देगा।[2] लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर बसा हुआ रत्नागिरी में हुआ था । जिसे हीरे जवाहरातों के पर्वत के नाम से विशेष ख्याति प्राप्त थी । इनका परिवार अत्यधिक रूप से संपन्न था, व्यवहार की तेजस्विता, विलक्षणता, स्वाभिमान, दृढ निश्चय इनको पिता से प्राप्त गुण थे । लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का परिवार शांडिल्य गोत्र का चितपावन ब्राह्मण था । पिता का नाम गंगाधरपंत तथा माता का नाम पार्वती बाई था। रीति के अनुसार इनके पिता महा के नाम पर केशवराव नाम रखा। लेकिन उन्हें सामान्य रूप से बलवंत राय कहा जाता था। अंत में बलवंत राय नाम भी प्रिय घरेलू नाम बाल के नाम से जाना गया। और इसी नाम से ख्याति प्राप्त यह बालक भारतीय इतिहास में बहुत अधिक प्रसिद्ध हुआ, विजय दशमी के दिन बाल ने विद्यालय में प्रवेश लिया उस समय इनकी आयु पांच वर्ष की थी। प्रथम गुरु भीकाजी कृष्ण पटवर्धन थे । सनातनी परिवार में जन्म होने के कारण लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का बचपन पुरातन परंपराओं का अनुपालन, कर्मकांड में अनुरक्ति विद्या प्राप्त करने में बीता।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की माता का देहावसान बहुत ही कम आयु में हो गया था। पिता के साथ बलवंतराव रत्नागिरी पूना आ गए थे । यही मराठी विद्यालय में व्याकरण, इतिहास, भूगोल की शिक्षा प्राप्त की थी । अपनी पितामह के समान ही प्रखर बुद्धिमान स्वाभिमानी थे। नैतिक चरित्र बल का बीजारोपण उनकी विद्यार्थी जीवन में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। शिक्षार्थी जीवन की घटना पर सीताराम लिखते हैं, कि उनकी स्पष्ट वादिता एवं सरल उत्तर देने के कारण उनके सहपाठी उन्हें यथा नाम तथा गुण पर आधारित केलिनवर्थना के उपन्यास के ब्लंट पात्र के नाम पर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को "ब्लंट" नाम से पुकारते थे । ब्लंट हृदय से दयालु निर्मल था। किसी का घमंड नहीं चलने देता था, विद्वान तथा अविद्वान दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार रखता था, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय जी इन सभी गुणों से युक्त थे।[3]

प्रायः अध्यापक के रूप में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक विद्यार्थियों के मध्य अत्यधिक श्रद्धा के पात्र थे। गणित पर बाल गंगाधर तिलक का वास्तविक प्रयोग शिक्षण कार्य के दौरान हुआ था। कभी–कभी तो वह बिना लिखे सवालों को हल करके विद्यार्थियों को अचंभित कर देते थे । तथा आदर्श अध्यापक के रूप में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक अपने विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिका को कभी भी पूर्णरूपेण नही देखा, इसके पीछे का कारण विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाना था । स्व. चिपलुणकर शास्त्री ने निबंधमाला के द्वारा पहले ही सुझाव रखा था कि शिक्षा का प्रचार प्रसार तीव्रता से होने के

[2] तिलक दर्शन : सरवटे और भंडारी, बाम्बे टाइम्स में प्रकाशित, पेज नं 15
[3] एन. सी. जोग : लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पेज नं 8

लिए रचना एवं कलम विद्यालय एवं समाचार पत्र यह दोनों मुख्य साधन है।[4]'' लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एवं आगरकर ने सहयोगीयों के संग केसरी मराठी भाषा में तथा मराठा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किए। 1881 में इन समाचार पत्रों की स्थापना की गई। तत्कालीन समय में पुणे में आधा दर्जन पत्र तथा पत्रिकाएं प्रकाशित होती थी। वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के अंतर्गत देसी भाषा समाचार पत्रों को अंग्रेजी सरकार के द्वारा प्रतिबंधित किया गया था। संत सोठ के अनुसार ब्रिटिश हुकूमत के पहले शासक भारतीय देश (देसी भाषा में प्रकाशित) की वास्तविक और प्रभावशाली स्वतंत्रता बढ़ाने के प्रति पूर्ण रूप से उदासीन थे।[5]

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को महत्वपूर्ण प्रसिद्धि अध्यापक के कार्यभार को निर्वाह करते हुए प्रथमतः उनके पत्रकारिता रूपी कार्य को मिली थी। यद्यपि कोल्हापुर का दीवान माधव बर्वे जो कोल्हापुर के महाराज के प्रति न्यायोचित व्यवहार नहीं करता था, के बारे में अत्याधिक कड़ी निंदा की तथा लेख प्रकाशित किए । केसरी एवं मराठा के माध्यम से बहुत से लोगों के द्वारा माधव बर्वे के अत्याचार, बर्बर कार्यों की निंदा तथा उसको अपना चरित्र निर्दोष साबित करने की चुनौती दी थी। मानहानि के केस में कुछ पत्र और प्रमाणों के गलत सिद्ध होने के कारण बाल गंगाधर तिलक और आगरकर को चार–चार माह के दंड की सजा की घोषणा 18 जुलाई 1882 को की गई तथा डोंगरी जेल भेजा गया था। 26 अक्टूबर 1882 को कारावास से रिहा होने पर दोनों का भव्य स्वागत हुआ। जनमानस ने अनुभव किया यह दोनों नौजवान मौलिक न्याय के लिए बिना किसी स्वार्थ के दुख भोगने के लिए तैयार हैं। केसरी तथा मराठा में लिखे लेखों के कारण अपने धार्मिक, कानूनी और ऐतिहासिक मर्यादाओं एवं परंपराओं की वजह से प्रसिद्धि मिलने लगी। कारावास मुक्ति के बाद लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अनुभव किया की जन कल्याण के लिए राजनीतिक जागरूकता नितांत रूप से आवश्यक है। उन्होंने पत्रकारिता और राजनीतिक प्रचार प्रसार के लिए अधिक समय देना प्रारंभ किया, तथा आगरकर सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का पूरा पूरा मन बना चुके थे, उन्होंने सामाजिक और शैक्षिक कार्यों में अत्यधिक दिलचस्मी लेना शुरू कर दिया था।

प्रायः गीता के अध्ययन के द्वारा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जीवन श्रेष्ठ, एवं संघर्षशील और सहन करने की शक्ति प्रदान कर चुका था। बचपन में मां को खो चुके लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक पर एक भयंकर वज्रपात हुआ 31 अगस्त 1972 को इनके पिता का अचानक स्वर्गवास हो गया । और अनाथ हो गए। जन्मजात सहनशीलता का गुण विद्यमान होने के कारण लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक इस भयंकर पीड़ा को सहन कर सके थे। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी बहुत ही आत्मविश्वास थे और दूरदर्शी व्यक्ति थे। अपने बलिदान और आत्मत्याग की, ऋषि समान भावना के द्वारा शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु जन जागरण की भावना रखने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और आगरकर के संबंध में, बी.पी. वर्मा ने वर्णन किया है, की लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और आगरकर भारत के जेसुइट बनना चाहते थे तिलक जी का शैक्षिक संस्थाओं में खुद को जोड़ने के दो उद्देश्य प्रकट होते हैं।

1. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक शैक्षिक प्रणाली को अधिक व्यय वाली नहीं अपितु सर्वसाध्य बनाने के पक्ष में थे तथा गुरु शिष्य आदर्श को दोबारा ग्रहण कर स्थापित करना चाहते थे।
2. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की निगाह में सबसे महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा का प्रचार प्रसार था तथा वह अच्छी तरह से अवगत थे, की राजनीतिक प्रबोध और राष्ट्रीय प्रगति के लिए शैक्षिक अवसरों का प्रसार अत्यधिक अनिवार्य है।

[4] तिलक दर्शन : सरवटे एवं भंडारी, पूर्वोक्त, पेज नं 44
[5] लोकमान्य तिलक : हिज सोशल एंड पोलिटिकल थॉट, पेज नं 21

प्रायः मूर्धन्य विद्वान होने के साथ–साथ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के आंतरिक मन में देश सेवा करने की दृढ इच्छा विद्यमान थी । तथा इस सेवा को पूरा करने के लिए पत्रकारिता के अतिरिक्त कुछ नहीं था । बाल गंगाधर तिलक की दूरदर्शिता, उनके जीवन संबंधी तथ्यों के अध्ययन से अनायास दृष्टिगोचर होने लगती है। क्योंकि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर जिन दो पत्र एवं पत्रिकाओं को निकालने का फैसला किया था, वो थे मराठा अंग्रेजी में, इसके प्रकाशन का मुख्य कारण पढ़े–लिखे मध्यम वर्ग को ध्यान में रखा गया था। और केसरी आम जनमानस का मुखपत्र था तथा यह मराठी भाषा में प्रकाशित किया जाता था। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के द्वारा वर्णन किया गया था कि हम लोग केवल धन प्राप्त करने की दृष्टि से पत्र नहीं निकालते अपितु समाज में मौजूद संदर्भों की खुली चर्चा करके जनमानस को जागृत करने के लिए चलाते हैं। आगे पत्रकार के सिर पर अत्यधिक जिम्मेदारी होती है, लेकिन उसके निर्वहन किए बिना और कोई चारा भी तो नहीं है।[6]''

संयुक्त प्रान्त में होमरूल का महत्व

अस्तु 1914 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के पुनः आगमन से भारतीय जनमानस में उत्साह और आनंद का माहौल उत्पन्न हुआ । लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने निर्वासन के समय के दवे अपने भावों को व्यक्त करते हुए अभिभाषण दिया, 6 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद आप लोगों के बीच आया हूं, तथा समकालीन परिस्थितियों से अपने आप को अवगत कराना चाहता हूं । मेरी स्थिति कुछ कुछ रिपवान विंकल के समान है, जो लंबे समय तक सोता रहा और जागने के पश्चात संसार को चमत्कारिक रूप से बदल दिया । सरकारी अफसरशाही ने अत्यधिक एकांत में रखा वो चाहते थे, कि मैं संसार को भूल जाऊं और संसार मुझे भूल जाए । परंतु मैं आप लोगों को नहीं भूला मुझे यह देख कर बहुत प्रसन्नता है । और आपके द्वारा भी मुझे विस्मृत नहीं किया गया, तथा मै लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूं, कि 6 वर्षों की जुदाई से आपके प्रति लेश मात्र भी प्रेम में कमी नहीं आई है। और मैं आज भी उसी जोश सामर्थ्य के साथ आपकी सेवा के लिए तत्पर हूँ, यों संभव है, कि मुझे इस संबंध में मुझे अपना पथ थोड़ा बदलना पड़ेगा।[7]

कारागार से मुक्त होने के पश्चात लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कुछ समय तत्कालीन भारत की परिस्थितियों को समझने में व्यतीत किया और सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेते हुए उनके द्वारा मराठा पत्र के संपादक को एक पत्र लिखा गया तथा जिसमें सरकार की नीतियों की प्रशंसा की गई। उनके द्वारा मिंटो मार्ले सुधारों की भी सराहना की गई तथा प्रथम विश्व युद्ध के समय सरकार को हर संभव सहायता प्रदान करने का वचन दिया गया । उनके द्वारा सरकारी सहायता पर विचार प्रकट करते हुए कहा गया, कि अन्य राजनैतिक कार्यकर्ताओं की भांति मेरे भी शासन संबंधी अनेकों नीतियों पर सरकार से मतभेद हैं। किंतु इसके माध्यम से यह विचार प्रकट करना, कि मैं सरकार का विरोधी हूँ पूरी तरह से असंगत और तर्क हीन है। मैं यहां पर स्पष्ट रूप से बता देना चाहता हूँ, कि भारत में हम आयरलैंड के निवासियों की भांति शासन प्रणाली में सुधार का प्रयत्न कर रहे हैं। ना कि सरकार को उखाड़ फेंकने का मुझे यह कहने में जरा भी हिचक नहीं है, कि देश के विभिन्न भागों में हुई हिंसात्मक घटनाओं का विरोध करता हूँ तथा यह भी समझता हूँ इनके कारण राजनीतिक स्थिति में बाधा ही पड़ी है। हिंसा केवल निंदा योग्य है। देश में शांति होना पर्याप्त नहीं, देश की उन्नति भी होनी चाहिए राष्ट्रीयता तो

[6] ''लोकमान्य तिलक : एक जीवनी– रामगोपाल, पेज नं 152
[7] एन. जी. जोग : लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पेज नं 135

E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

ढोंग हो जाए, यदि राष्ट्रवादी उस उन्नति को स्वीकार करने से इनका कर दें, जो केवल मेल मिलाप से ही उत्पन्न हो सकती है।[8]

कतिपय भारत की सियासत के लिए 1916 ई० वेलगाँव प्रान्तीय अधिवेशन बहुत ही महत्वपूर्ण था। यहाँ लोकमन्य बाल गंगाधर तिलक की अगवाही में राष्ट्रवादी ताकतों को एकता के सूत्र में बाधने के लिए प्रगतिशील नीतियों पर बल दिया गया। 28 अप्रैल 1916 को बेलगाव में औपचारिक रूप से होमरुल लीग की स्थापना की गयी। उन्हें अच्छी तरह से जानकारी थी, कि ऐसे समय में भारतीय योद्धा ब्रिटेन के लिए फ्रांस में जर्मन की सेना से पुद्ध कर रहे हैं। ब्रिटिश अफसर शाही दमन चक्र का प्रयोग नहीं कर सकती थी एवं दूसरा उत्तम लाभ, मुस्लिमो का सहयोग भी मिलने वाला था, क्योंकि तुर्की के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार के युद्ध से नाराज थे। इसी विरोध के फलस्वरूप बड़े नेता 'अली बन्धुओं' को सरकार के द्वारा नजर बन्द कर लिया गया था। अकोला में अभिभाषण करते हुए लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने 1916 में कहा होम रूल लीग कुशासन को समाप्त करने वाला एक मात्र उपाप है– क्या जिसे हिन्दु मुस्लिम, उदार राष्ट्रवादी सभी ने एकता से स्वीकार किया है। इसका अर्थ है, कि देश में प्रतिनिधि सरकार लायी जाए, जिस पर जनता का नियंत्रण हो।[9]

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय यह बात स्पष्ट कर दी गयी कि वो अवसर वादी नहीं हैं और न ही युद्ध के बदले में स्वशासन की माँग कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्टतः बताया कि हमारा मन्तव्य यह कतई नहीं हैं, कि भारत में ब्रितानी हुकुमत के स्थान पर किसी दूसरे देश का शासन स्थापित हो। वो चाहते थे कि जो शासक हैं एवं शासितों के बीच गतिरोध का महौल समाप्त हो एवं स्वयं के मसलों में फैसला लेने का स्वायात्य अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने बेलगांव सम्मेलन में एक ओजपूर्ण भाषण में विचार प्रकट किया । लोकमान्य गंगाधर तिलक के द्वारा स्पष्ट किया गया कि जो वर्तमान समय में शासन व्यवस्था लागू है उसमें अनेको कमियाँ हैं और कमियों के कारण देश में बहुत अधिक रोष और अशान्ति की स्थिति मौजूद है। कतिपय यह रोष हमारी माँगों के रास्ते में रुकावट पैदा नहीं कर सकता। स्वयं की शक्ति को त्यागने की अधिकारी तंत्र की अनिच्छा का मूलभूत कारक यह मिथ्या भय है। कि इसकी प्रतिष्ठा समाप्त हो जायेगी। लेकिन युद्ध में जो भारतीय लोगो की सेवा ने ब्रिटिशो की आँखे खोल दी हैं। तथा विश्वास करा दिया है, कि अफसरशाही के द्वारा प्रकार की जा रही शंका का कोई महत्वपूर्ण आधार नहीं है। वो ये समझ गये होगें कि अफसरशाही का हम भारतीयों पर निश्वास न करना स्वार्थ मूलक था। वर्तमान समय हमारी मांगों पर जोर देने के अनुकूल है, जिससे हमारी मागें पार्लियामेन्ट के कानून द्वारा स्वीकृत हो जायें। मेरे अनुसार हमारी राजभक्ति एवं वर्तमान विश्व युद्ध में यही सम्बन्ध स्पष्ट होता है। यहाँ से लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के द्वारा राजनैतिक संघर्ष को एक नई दिशा दी गयी।[10]

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक कांग्रेस के सदस्य नवम्बर 1916 ई0 में बने थे। और दिसम्बर 1916 ई. में जब स्वागत लखनऊ में आगमन हुआ तो उनके स्वागत के लिये जोश से परिपूर्ण प्रसंसको के द्वारा भव्य स्वागत किया गया तथा तिलक महाराज की जय के नारों के उदघोष वातावरण गूंज रहा था। यह यह पहला मौका था जब नरम, गरम एवं मुस्लिम लोग एक ही मंच पर उपस्थित थे।[11] लीग और कॉंग्रेस एक मध्यम रास्ते की खोज कर रहे थे। जिसमें मुस्लिमो को प्रतिनिधित्व के निर्धारित अनुपात में सीट तथा से वैधानिक सुधार के लिए पोजना शामिल थी । लखनऊ कांग्रेस के पहले की सभाओं में यह निर्णय ले लिया गया था, कि दोनों मुख्य सबालो का हल किस तरह होगा तिलक के

[8] बी. पी. वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिकचिन्तक, पूर्वोक्त पेज नं 272
[9] लोकमान्य तिलक : हिज राइटिंग्स एंड स्पीचेच, पेज नं 235
[10] लोकमान्य तिलक : जीवन और दर्शन, पेज नं 345
[11] न्यू इंडिया, 25 सितम्बर, 1915 पेज 307

अथक प्रयास और मु. अली जिन्ना के राष्ट्रवादी रवैये के कारण यह प्रयोजन सफल रहा। पहले से घोषित प्रथक निर्वाचन द्वारा प्रान्तीय विधान मण्डलों में मुस्लमानों के लिए सीटों को आरक्षित करके हिन्दू मुसलिम संगम का उपाय निकाल लिया गया था। तथा मुसलमानों के द्वारा संवैधानिक समाधान की योजना का स्वागत किया गया। जिससे ब्रितानी हुकूमत के तहत पराधीन देश के स्तर से आगे स्वशासी उपनिवेशों की हैसियत से आगे आकर बराबर का हिस्सा दिया जाये। इस सम्पूर्ण आयोजन की सफलता का श्रेष्ठ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय को प्रदान किया गया। डा. मुख्त्यार अंसारी के द्वारा वर्णन किया गया, कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानो को पक्ष में लाने और लखनऊ पैक्ट के प्रस्तावों को उनसे स्वीकार कराने की उदार मनोवृत्ति को बहुत बड़ा सहयोग रहा है।[12]

महानायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के द्वारा लखनऊ अधिवेशन में ऐतिहासिक नारा दिया गया, जिससे उनकी विद्वता एवं दूरदर्शिता अनुपम उदाहरण प्राप्त होता है। जब जब भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दिनों को याद किया जायेगा, इस वाक्य को भी बहुत मजबूती के साथ याद किया जायेगा – ''होमरुल मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा'' लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय के द्वारा लखनऊ में जो से होमरूल लीग का प्रचार प्रसार किया गया, ताकि जनमानस के मन मस्तक पर 'ईश प्रर्थना' की तरह दिलो में बस जाये, कि स्वाराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है मैं इसे लेकर रहूँगा । लखनऊ से औद्योगिक नगर को प्रस्थान किया तथा कानपुर में एक और बहुत विशाल जन समूह के समक्ष भाषण दिया तथा उन्हें स्वराज्य से की अवगत कराया कतिपय वह भाषण अंग्रेजी भाषा में था तथा जिसे खापर्डे के द्वारा हिन्दी भाषा में अनुवाद किया गया था। उनके द्वारा कानपुर में ही हिन्दी भाषा को मातृभाष के रूप में अंगीकार करने सिफारिश की गयी । तथा घोषणा की गयी कि हम बिर्तानी हुकूमत में चाकरो, कुलियों की तरह नहीं रहेंगे। भारत को अपनी मूलभूत शक्ति और सच्चे स्वरूप पता उसी भाँति चल गया है, जिस तरह से लोकोपति है कि भेड़ो के बीच पले सिंह के बच्चे को जल में अपनी प्रतिछाया निहारने के पश्चात पता चलता है। भारतीय लोगो को भी अपनी वस्तु स्थिति और भविष्य का ज्ञान प्राप्त हो चुका है। जापानी भी एशिया बासी हैं, अपनी स्वाधीनता का प्रयोग कर रहे हैं. स्वराज्य की जिम्मेदारी वहन कर रहे हैं, तो भारतीय भी ऐसा क्यों नही कर सकते।[13]

सामान्यतः कॉग्रेस लीग पैक्ट लखनऊ अधिवेशन के उपरान्त लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय ने किसी भी हालात में आराम नहीं करने का संकल्प लिया । कानपुर उसके बाद कलकत्ता आदि शहरों का लगातार भ्रमण किया, एवं 18 महीनों तक निरन्तर रूप से तूफानी दौरा करते रहे, तथा होमरूल आन्दोलन कि आवाज को सर्वसाधारण में अति लोकप्रिय बना दिया। बीसवी सदी का द्वितीय दशक भारत में उस राष्ट्रवादी विकास की स्थापना का हमेशा ग्वाह रहेगा। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और ऐनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित होम रूल लीग आन्दोलन उच्च दर्जे के नेतृत्व कर्ताओं को आपस में जोड़ने में सफल रहा। इसके कारण अधिकारी तंत्र के पैर अब उखड़ने लगे थे। उनके द्वारा हृदय विदारक, निर्मम तरीके से दमन करने के मार्ग का चयन किया गया । श्रीमती ऐनी बेसेन्ट को नजरबंद किया तथा जिसके फलस्वरूप मोती लाल नेहरू, सी० बाई 0 चिन्तामणि और मु. अली जिन्ना जैसे अग्रणी के नेता होमरूल लीग के समर्थन में खुलकर अभिभाषण करने लगे । इस पुनीत कार्य में महानायक लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की केन्द्रीय भूमिका थी। उनके मार्ग दर्शन में कांग्रेस के माध्यम से वायसराय और सेक्रेटरी आफ स्टेट के सम्मुख एक आग उगला आवेदन पत्र भेजा गया था। इस पत्र में भारतीयों को स्वराज्य एवं श्रीमती ऐनीवेसेन्ट और अलीबन्धुओं के नजरबन्दी से रिहाई की दरख्वास्त की गयी थी। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का विचार था इस विकराल स्थिति में ऐनी बेसेन्ट को कांग्रेस का अध्यक्ष चुनकर ब्रिटिश सरकार को करारा जवाब दिया जाये। अप्रत्यक्ष प्रतिरोध का समर्थन

[12] लोकमान्य तिलक : जीवन और दर्शन पूर्वोक्त, पेज नं 357

[13] लोकमान्य बालगंगाधर तिलक : एन. सी. जोग पूर्वोक्त, पेज नं 149–150

हुए तिलक ने सरकार से अपील की, कि वह जनमानस को सन्तुष्टी देने के लिए उपयुक्त कदम बढ़ापे तथा फलस्वरूप ऐनी बेसेन्ट को रिहा कर दिया गया।

प्रायः लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय कॉग्रेसी शिष्ट मण्डल ब्रिटेन भेजना चाहते थे, जो ब्रिटिश नागरिकों को समझा सकें भारत में अकूत सैन्य ताकत है, जो ब्रिटेन के लिए युद्ध में लाभ युक्त निर्णायक भूमिका निभा सकता है। जुलाई 1917 ई० शिष्टमण्डल इंग्लैण्ड भेजने का संकल्प लिया गया। पूरे भारत वर्ष में यह आन्दोलन फैल जायेगा यदि सरकार द्वारा नीति विषयक कोई घोषणा नहीं की गयी तो। और शासन करने में बहुत परेशानी होगी। 20 अगस्त 1917 को ब्रिटिश संसद में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घोषणा की गयी की – बितानी हुकूमत की यह नीति थी कि प्रशासन के प्रत्येक भाग में भारतीयों की अधिक से अधिक संख्या में भागीदारी सुनिश्चित की जायेगी। ताकि भारत में बितानी हुकूमत के एक अभिन्न अंग के रूप में उत्तरदायी सरकार की स्थापना हो सके। तथा प्रगति शील उपलब्धि के लिए स्वशासित संस्थाओं का क्रमिक तरीके से विकास किया जा सके।[14]

निष्कर्ष

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी जी के द्वारा तिलक महोदय को सागर की भाँति गहरा सम्बोधित किया गया था। श्री गांधी जी ने ''विश्वास की आत्म स्वीकृति' शीर्षक के अंतर्गत तिलक महोदय के सम्मान में एक लेख लिखा– मैं स्वर्गीय लोकमान्य तिलक महोदय के अनुयायी होने का सम्मान का दावा नहीं कर सकता। मैं प्रसंशा करता हूँ उनकी शुद्धता, महान त्याग देश प्रेम की आधुनिक समय के सभी मानवो से बढ़कर उन्होंने भारतीयों के विचारों के सबसे अधिक प्रभावित किया तथा हमारे हृदय में स्वराज्य की भावना का संचार किया। तिलक महोदय के समान किसी इसरे व्यक्ति ने मौजूदा शासन प्रणाली की आलोचना की नही समझा और बहुत ही आदरपूर्वक मैं उनके सर्वश्रेष्ठ शिष्यों के समान पूरी सच्चाई के साथ देश को उनका सन्देश देने का दावा करता हूँ 1. मैं सचाई से सोचता हूँ, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महोदय ये साधनों में अविश्वास नही करते थे। मृत्यु से 15 दिन पहले कई दोस्तो की उपस्थिति में उनके द्वारा अन्तिम बातें कहीं गयी थी, कि यदि जनता उसे अपना सके तो मेरा तरीका बहुत अच्छा है। परन्तु कहा इसमें संशय है तिलक महोदय के बारे में कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत प्रयास के बिना राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की दशा और दिशा सम्भवतः अनियन्त्रित और अप्रभावी होती है।[15] प्रायः मूर्धन्य विद्वान होने के साथ–साथ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के आंतरिक मन में देश सेवा करने की दृढ इच्छा विद्यमान थी। तथा इस सेवा को पूरा करने के लिए पत्रकारिता के अतिरिक्त कुछ नहीं था। बाल गंगाधर तिलक की दूरदर्शिता, उनके जीवन संबंधी तथ्यों के अध्ययन से अनायास दृष्टिगोचर होने लगती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लोकमान्य तिलक हिज राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज पृ0.190 (नागर में भाषण 1 जून 1916)
2. तिलक दर्शन : सरवटे और भंडारी, बाम्बे टाइम्स में प्रकाशित, पेज नं 15
3. एन. सी. जोग : लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पेज नं 8

[14] 'भारत संविधान विकास रिपोर्ट –1917 (जीवन और दर्शन में उद्दत)
[15] यंग इण्डिया में 23, जुलाई 1921 को प्रकाशित लेख।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

4. तिलक दर्शन : सरवटे एवं भंडारी, पूर्वोक्त, पेज नं 44
5. लोकमान्य तिलक : हिज सोशल एंड पोलिटिकल थॉट, पेज नं 21
6. ''लोकमान्य तिलक : एक जीवनी– रामगोपाल, पेज नं 152
7. एन. जी. जोग : लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पेज नं 135
8. बी. पी. वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिकचिन्तक, पूर्वोक्त पेज नं 272
9. लोकमान्य तिलक : हिज राइटिंग्स एंड स्पीचेच, पेज नं 235
10. लोकमान्य तिलक : जीवन और दर्शन, पेज नं 345
11. न्यू इंडिया, 25 सितम्बर, 1915 पेज 307
12. लोकमान्य तिलक : जीवन और दर्शन पूर्वोक्त, पेज नं 357
13. लोकमान्य बालगंगाधर तिलक : एन. सी. जोग पूर्वोक्त, पेज नं 149–150
14. 'भारत संविधान विकास रिपोर्ट –1917 (जीवन और दर्शन में उद्दत)
15. यंग इण्डिया में 23, जुलाई 1921 को प्रकाशित लेख।